पर्ण विराम

मिनी दल्हान बनी फला की सज पर बठी घबराए जा रही थी। इन अमल्य क्षणा म हर नई नवली दल्हन जा कछ साचकर लाज स छई मई हई जाती ह व हर आन वाल पल म उस सपना क राजकमार क कदमा की आहट की बाट जाहती ह जा आग बढकर उस अपनी बाहा म भरकर उस जीवन की अमल्य निधि स सराबार कर दगा एसा किसी भी पकार का भावनात्मक आदालन उसक अर्न्त म पस्फटित नही हा रहा था। वा ता चाह रही थी कि वा पल वही ठहर जाए समय की गति थम जाए व वह किसी घटनाकम का हिस्सा न बन।

दाना घटना म ठाडी टिकाए वह अतीत क पृष्ठ पलटन लगी। जिस पृष्ठ पर मजर महरा यानि कि उसक पापा अखबारा म स वर ढढन क लिए पत ढढकर **2 3** पत्र डाक म हर हफ्त डाल ही दत थ। उसका ध्यान वही जम गया। फिर पृष्ठ दर पृष्ठ अतीत चलचित्र की भाति उसक समक्ष था। पापा का काई रिश्ता जच नही रहा था। तभी कप्टन विकम खन्ना का पत्र आया जा उन्ह जच गया। उन्हान माका हाथ स जान नही दिया। चदीगढ क एक बढिया हाटल म विकम व मिनी का मिलान का पागाम बनाया गया। मिनी का विकम पहली नजर म ही भा गया। वह बहत स्मार्ट व खल स्वभाव का था। लकिन साथ ही मिनी का कछ खटक रहा था जा उस राक रहा था। क्या वह समझ नही पा रही थी। उस मन का वहम समझ वह सयत हा गई। उधर विकम का भी मिनी एकदम पसद आ गई। रिश्ता पक्का हा गया। विकम क पास बस यही छट्टिया थी सा पदह दिना क भीतर शादी का महर्त निकाल लिया गया। शादी की जारदार तय्यारिया म किसी का भी कछ साचन की फर्सत ही कहा थी।

शभ दिन म शभ महर्त पर रिश्त नातदारा व दास्ता की भीड म मिनी दल्हन बनी डाली स उतरी। बहना न नग लिए आर भाभिया न दल्हन का लाकर फला की सज पर बठाया। विकम क दास्ता न जान बझकर उस दर स छाडा। मिलन की पहली रात का ढरा उमग लिए विकम जस ही कमर क भीतर आया व जल्दी स दरवाजा बद करन लगा ता उस आवाज स मिनी की तन्दा टटी। वा अतीत स पलटकर वर्तमान म आई। उसका शरीर थर्र थर्र कापन लगा। घबराहट व डर क मार वा ठडी पडन लगी एवम् उसक दात किट किट बजन लग गए। विकम न जब यह सब दखा ता बहत ही प्यार स उस पकडकर कछ कहना चाहा कि तभी मिनी न जार स झटककर उस अपन स दर कर दिया। भयभीत हिरनी सी आखा स उस दखन लगी। विकम हतपभ सा पत्थर का बत बना उस दख रहा था। वह इस अपत्याशित व्यवहार का काई कारण नही समझ पा रहा था। हरान परशान सा वह उसकी भयभीत दृष्टि का झल नही पा रहा था। पहली रात का नशा ता हवा हा गया था। मिनी चिल्ला रही थी फ़्न न न मझ हाथ न लगाना। मर पास न आना। ﬁबालत बालत वा धीर धीर पीछ चलती हई दीवार स सटती चली गई थी। विकम न हिम्मतकर आग बढत हए उसका गिरा आचल उठात हए कहा फ़्क्या बात ह मिनी® डर क्या रही हा®भला भई नही लगाता हाथ। आआ बठा डरा मत। ख़्यह कह कर विकम आग बढा ही था कि मिनी चीखी फ़्आग मत बढना सिर फाड दगी तम्हारा।ख़ उसकी आखा स चिन्गारिया निकल रही थी। उस कछ हाश नही था। घर म ढरा रिश्तदार थ। उनका ध्यान आत ही विकम न चपचाप कदम पीछ हटा लिए। उसकी समझ ता माना घास चरन चली गई थी। उसक मीठ स्वप्न टट कर बिखर गए थ। माक की नजाकत का समझत हए वह कमर स बाहर निकला व छिपता छपाता ऊपर टरस पर चला आया। वही वह सिगरट फकता रहा। मिनी का अपत्याशित व्यवहार उस भीतर तक जख्म द गया था। उसक भीतर हाहाकार मचा हआ था।

©Veena Vij

रात क पिछल पहर जब वह कमर म दब पाव लाटा ता दखता क्या ह कि मिनी वही फर्श पर बसध सी साई पडी थी।विकम न डरत हए उस धीर स उठाकर विस्तर पर डाल दिया व स्वय पास पड साफ पर लट गया।अरमाना व बहारा की रात उसक जीवन म एसी हागी उसन कभी ख्वाब म भी नही साचा था।पास ही तिपाई पर रख शगन क दा गिलास दध क विकम न उठाकर पी लिए। जिसस सबह मा का सब कछ स्वभाविक लग ।

अगल दिन दाना हनीमन पर ऊटी क लिए चल पड।बगलार तक हवाईजहाज स उसक आग टक्सी स।विकम न साचा शायद मिनी नर्वस हा गई थी अब घर स दर ऊटी क पाकृतिक माहाल म सान्दर्यमयी छटाआ क मध्य उसक नवजीवन की नीव रखी जाएगी।उसन पनः ढरा स्वप्न सजान आरभ कर दिए।यहा पहचकर मिनी हसती खिलखिलाती दाडती ढरा तस्वीर खिचाती रही।दाना घमन जात बाहर खाना खात पर हाटल पहचत ही वा फरश हाकर झट सा जाती।विकम टी वी पर पागाम दखता व सिगरट फकता रहता।आस की एक नाजक डार क सहार चलत हए अत म मायसिया का दामन थाम थक कर सा जाता।व वहा पाच दिन ठहर।मिनी न विकम का अपन का छन नही दिया।एक आध बार विकम न हसी हसी म उसक करीब जान का यत्न किया।लकिन मिनी घबराकर पीछ हट गई व पछन पर काई कारण भी नही बताया।विकम क धर्य का बाध टट गया।आखरी दिन उसन जबरदस्ती करनी चाही ता मिनी हाटल क लान म भाग गई ।लाक लाज स भरा विकम मन मार कर हनीमन स वापिस घर लाट आया।उसक अगल दिन मिनी मायक फरा डालन चली गई।ममी पापा क कहन पर वा मिनी का दा दिन बाद घर वापिस लिवा लाया।लकिन विकम का खाया खाया व सखा चहरा उसक ममी पापा स छिप न सका।विकम क पापा रात का खाना खान क पश्चात् सर करन क बहान विकम का साथ लकर लम्बी सर का निकल।रास्त म पापा क पछन पर उसन उन्ह सारी बात बताई व उनक कध पर सिर रखकर रा पडा।पिछल दस दिना स जिस अर्न्तवदना का वह घट घट कर सह रहा था आज पापा का कधा उस सबल द रहा था।सब जानकर पापा भी परशान हा गए थ।इकलात बट का दःख उनस भी सहा नही जा रहा था।कितन पसन्न थ व अपन बट का विवाह इतनी धमधाम स करक ।आर यहा बटा इतना दखी।

खर विकम की ममी स सलाह करक उन्हान मिनी का अपन पास बलाया व पछा कि क्या उस काई कष्ट ह®जवाब म मिनी न चप्पी साध रखी।आखीर म मिनी क माता पिता का बलवा भजा गया।सम्पर्ण तथ्या की जानकारी हान पर व भी हरान हा गए।उन्हान भी बहत यत्न किया कि मिनी कछ बताए लकिन वह चप रही।गमसम सी।आखीरकार उस मनावज्ञानिक चिकित्सक क पास चलन का राजी कर लिया गया।कछ बठका क पश्चात् जिस राज का पर्दाफाश हआ उस जानकर सभी स्तब्ध रह गए।

मिनी क कथनानसार जब मिनी छाटी थी व उसक पापा की फील्ड पास्टिग थी उन दिना वह घर म ममी क साथ अकली हाती थी।पापा क कई दास्त व कई फ़्रकपल√पीछ स ममी का मिलन व हाल चाल पछन आया करत थ।स्कल स लाटकर जब वह सा जाती थी ता ममी कभी सहलिया क घर गप्प मारन कभी पडास म ता कभी ताश खलन चली जाती थी।पापा क दास्त वर्मा अकल अधिकतर एस समय ही उनक घर आत थ।यह उसक साकर उठन आर हामवर्क करन का समय हाता था।वर्मा अकल उस प्यार करक गाद म बठात आर हामवर्क करान क बहान उसक नाजक अगा का छडत रहत थ।मिनी उनक हाथ हटाती ता व आर बढ जात।मिनी किसी स भी कछ कह नही पाती न ममी का कछ बता पाती थी।किन्त उस इतना अवश्य लगता कि यह सब गलत ह।वह मह खालन पर तरह तरह की आशकाआ का अपन भीतर मडरात हए पाती थी।चतनाशन्य सी मशीनी पर्ज की तरह वह चप्पी साध गई।अन्य बच्चा स भिन्न।उधर ममी घर

©Veena Vij

आकर फली न समाती कि वर्मा अकल हामवर्क करा गए क्याकि उनकी सिरदर्दी कम जा हा जाती थी। अर्दली स पछती कि उनका चाय नाश्ता ठीक स कराया था न।

जिदगी की नियति कहिए कि उन्ही दिना उसक पापा का फान आया कि फील्ड म मस म इतजाम हा गया ह सा मिनी का मि वर्मा क घर छाडकर वीस पच्चीस दिना क लिए ममी उनक पास आ जाए। पीछ स मिनी का स्कल मिस नही हागा। उसकी पढाई चलती रहगी। मिनी वहत राई चिल्लाई कि वह वर्मा अकल क घर पर नही रहगी लकिन उसस अधिक सरक्षित जगह ममी का काई दसरी नही लगी। साथ ही व पढा भी दत थ मिनी का । सा व छटपटाती मिनी का गहरी खाई म धकलकर चली गई। उधर मिनी भयभीत सी भविष्य क घिनान पला की परछाई का अपन ऊपर छात दखकर सहम सी गई थी।

जिस वात स वह डर रही थी वही सव घट रहा था अव उसक साथ। सारी अनभतिया अवचतन मानसिकता की गहरी झील म वजनदार पत्थरा क साथ वाध गए अवध शिश की तरह कही वहत गहर डवती चली जा रही थी। दष्ट राक्षस की तरह वर्मा अकल की वाछ खिल गई थी। चपक चपक उनकी छडखानी की सीमा अपनी हद लाघ गई थी। आटी भी ममी जसी ही थी। वा सारी सारी रात दर्द स कराहती व छटपटाती। उसक जिस्म पर निशान वनत जा रह थ। नाजक वदन पर नील पड गए थ। इन वीस दिना म वाल सलभ मन परिपक्वता की पराकाष्ठा पर पहच चका था। पत्थर की मक शिला वन कर रह गई थी मिनी। ममी क लाटन पर मिनी अपनी ममी स वहद नफरत करन लग गई थी। व साचती कि वटी उनक विना उदास हा गई ह तभी पीली पड गई ह। उधर मिनी कमरा वद करक किताबा म डवी रहती थी। स्कल व घर इसक अलावा वह किसी स भी नही मिलती थी। वर्मा अकल स भी नहीरु रु ।

कछ महीना पश्चात् उसक पापा की पास्टिग सिकन्दराबाद की हा गई। माहाल वदल गया। यहा पर भी मिनी न पस्तका क अलावा किसी स दास्ती नही की। वह यथाशक्ति अपन जिस्म का ढाक कर रखती थी। कि कही काई खला अग अपनी वर्वादी की दास्ता न सना द किसी का। यावन क भरपर पर्दापण पर भी उसन उस खिलकर महकन नही दिया। वह सकचाई ही रही।

विकम का खलापन उस भाया था। पथम वार काई उस भी अच्छा स्मार्ट व सन्दर लगा था। विकम क साथ घमना फिरना हसना खलना वात करना उस आनन्दित करता था। एसी खशी उस पहली वार मिली थी। लकिन शरीर का हाथ लगाना नही वा यह नही सह सकती। सहाग रात का विकम का अपनी आर वढत दख उस उसम वर्मा अकल दिखाई द रह थ। व सारी अनभतिया जा अवचतन मानसिकता की गहरी झील म डवी पडी थी व वडी तजी स सतह की आर उठती चली आई थी। फलस्वरूप आखा स अधर म उडती हई चिन्गारिया क अलावा कछ आर नही निकल रहा था। वह वदहवास चीख जा रही थी उस हाश नही था।

यह सव सनत हए मिनी की ममी का रा राकर वरा हाल था। उसक ममी पापा आत्मग्लानि स भर उठ थ। मिनी क नयन सरावरा का ता सारा जल कव स सख चका था। वह जानती थी कि जीवन पर्यन्त वा इस राग स गसित रहगी। मनावज्ञानिक चिकित्सक व अन्य सव न भी उस वहत समझाया लकिन सव निर्रथक रहा। उसी आधार पर मिनी का विकम स तलाक हा गया। वालकण्ठा child abuse≪न मिनी की जीवन भर की खशिया का एसा पर्ण विराम लगा दिया कि वह जीवन पर्यन्त एकाकीपन क अधकप म सिसकती रह गई।

वीणा विज

फ़ुदित√

©Veena Vij